जाहीर उपाध्याय महाविद्यालय के अध्यक्ष की ओर से सभी संघ सदस्योंके लिए पत्र

प्रिय संघ बंधु तथा बहनो,
पिछले कुछ माहसे हमारे संघ के भीतर संघरक्षितजी तथा संघ के बारे मे चर्चा की तरंगे उठती दिखाई दे रही है, हमारा संघ जिस तरह से निर्माण हुआ, संघटीत हुआ तथा उसे चलाया गया, इन मुद्दोंपर कुछ संघ सदस्योंने सवाल उपस्थित किये, अधिष्ठान मे हुए ६ मार्च से १६ मार्च तक चली सभा का यही मुख्य विषय रहा। इस चर्चा मे शामिल होते ही, हमारा ऐसा मानना है की अन्य संघ सदस्य हमारे जैसा ही अपने संघ के तथा आंदोलन के प्रती गहरा प्यार और चिंता जताते है। तथा एक धाम्मिक संघ के रुप मे जो कोई मर्यादाएं दिखाई देती है उन्हे सुलझाना चाहते है। उसी के साथ यह समझते हुए की कौनसी बाते हमारे लिए समस्या ग्रस्त रही तथा आज भी अडचण बनी हुई है। हम यह भी स्विकृत करना चाहते है की कई लोगोंने हमे बताया है की कितनी भारी मात्रा मे उन्हे संघ तथा आंदोलन मे सम्मिलीत होकर लाभ हुए है। कई लोग तो जिन सवालोंके प्रति हम यहां प्रतिसाद दे रहे है उनका उन्हे कोई सरोकार ही नही है, यद्यपि, हम जानते है की इसे जल्द से जल्द तत्परता से सुलझाना जरुरी है।

महाविद्यालय मे विभिन्न व्यक्तित्व तथा स्वभाव के लोग है, लेकिन जब हम सभी पहले ही दिन के सुबह इकठ्ठा आए, तो तुरंत ही हमने जाना की हमारी बुनियादी तत्वोंकी समझदारी एक जैसी ही है। जो भी कोई विभिन्नताएं हममे थी वह ज्यादातर हमारी पध्दतीयाँ और जिन बातोंपर हम अधिक बल देना चाहते है, उनपर थी। मै चाहता हुँ की मै अपनी स्वयं की समझदारी हम सभी की जो सामान्य सोच है, वह आप सभी से बाँटना चाहता हुँ। मैने इन बातोंको मेरे सहयोगी उपाध्यक्षोंके, अमृतदीप, परमबंधू तथा रत्नधारीणी के साथ तथा अधिष्ठान कुल के सदस्योंके साथ जाँच ली है।

यहां चिंता के प्रमुख तीन मुद्दे नजर आते है, जो की एकदुसरे से जुडे है लेकिन साथ ही वे काफी भिन्न भी है।

(१) भुतकाल की पीडाएं और अकुशलताएं, जिसका शायद आज भी हमारे संघपर परीणाम हो।
(२) हमारे संघ का मूल ढाँचा तथा आधार और संघरक्षितजी का उसमे स्थान ।
(३) हमारी आचरण पद्धतीयां तथा संघ और आंदोलन की संस्थाएं।

इसमे जो उभर आया है, मै उसे आप सभी को बतलाना चाहता हुं की समुचे महाविद्यालय का इन हर एक बातोंकी ओर देखनेका नजरीया क्या है वह संक्षेप में बताने की कोशिश करुंगा।

(१) भुतकाल की पीडाएं तथा अकुशलयाएं :-

हम उन लोगों से सुन रहे है जिनके त्रिरत्न (संघ) मे अनुभव काफी कठीण, दुखभरे या संभ्रमीत रहे है। हमने जो भी कुछ सुना उससे हमारे मन द्रवीत हो गए और हम चाहते है की, उन्हे प्रोत्साहीत करें, की वे सच्चे बौद्धोंकी संस्कृतीका खुलापन, पापदेसना तथा क्षमाक्षिलता के साथ उसमे वे सहभाग ले। हमारे इतिहास की पूर्णतः जानकारी ले पाना तथा उनके परीणामों को जान पाना अर्थात ही कठीण हो सकता है। यह बहुत ही सटिक जानकारी और खुली चर्चा के आधार पर होना जरुरी है, और हमे लगता है की यह प्रक्रिया जल्दबाजी मे ना हो,और नाही बंद हो। वास्तव मे देखा जाए तो, यह सदा ही आगे बढती रहनी चाहिए। जो भी कुछ अकुशल कृतीयां हुई है उसे जान लेना, समझ लेना, उसकी पाप देसना करना और जहाँ कही आपसी सबंध गलत हुए है उन्हे दुरुस्त करना।

हमारे मन मे जो प्रमुख मुद्दे है, वह यह है:-

सर्वप्रथम, संघरक्षितजी की कोई भी पूर्व कृतीयाँ, जिस मे उनकी कुछ लैंगीक कृतियाँ भी शामील है, और जिससे की शायद अन्य लोगों को क्षति पहुँची हो। भंतेजी ने दिसंबर मे स्वयं लिखे पापदेसनात्मक पत्र मे कहा है की जिन जिन अवसरोंपर उन्होने किसी को दुख:,क्षति या किसी को नाराज किया हो ऐसे सहयोगी बौद्धोंके प्रति उन्होने गहरा खेद व्यक्त किया है । हम खुले तौर पर जो कुछ भी हुआ है उसे जानने के लिए प्रोत्साहीत करना चाहेंगे और हम जितना संभव हो उसे सुलझाने मे मदत करेंगे।

दुसरी बात, संघ मे जो भी कुछ गतिविधीयां या तो अकुशल रही हो या फिर असहायतापूर्ण रही हो, जिनमे कई कल्पनाओंको बढावा देना भी शामिल है, उसे स्विकार करना, फिर चाहे वह संघरक्षितजी से आये हो या अन्य तरह से, महिला और पुरुषोंके सापेक्ष धाम्मीक रवैयों से सबंधित हो, अपने लैगीक संबंधो के बारे मे हो या परिवार से सबंधीत हो, और लैंगीक सबंधोको कल्याणमित्रता से जोडने के बारे मे हो।

तीसरी बात, बुनियादी तथा उपयुक्त आचरण पद्धतीयोंका गलत इस्तेमाल करना। जैसे की, एकलिंगी गतिविधिया महत्वपूर्ण है, तथा उनका अपने धम्म जीवन के प्रशिक्षण मे केंद्रिय स्थान है, लेकीन पुर्व काल मे ऐसे भी कुछ उदाहरण है जिसमे इन बातोंको बडी मात्रा मे बढावा दिया गया है, और जब की हमारी कल्याण मित्रता मे खुलापन तथा प्रामाणिक संपर्क को हम जादातर महत्व देते है । हमने ऐसी भी टिप्पणीयां सुनी है जो कठोर तथा भारी मात्रा मे आलोचनात्मक रही है।

हम इन बातोंसे जुडे रहते हुए सहयोग देना चाहते है, उदा.के तौरपर अधिष्ठान कुल के माध्यम से, जिसे पूर्व स्थिती मे लाने की प्रक्रिया कहते है (रेस्टोरेटीव्ह प्रोसेस) के माध्यम से, तथा शायद बाहर के सहाय्यता करने वाले लोगोंकी मदत लेकर । हमे इसे दो दृष्टीसे देखना जरुरी है, भूतकाल मे क्या हुआ और किस तरह से आज भी हमारी संस्कृतीपर उनके असर दिखाई दे रहे है । ऐसा कोई आसान तरीका नजर नही, जिससे की हम इन मसलोंको सुलझा सके लेकिन हम अन्य संघ सदस्योंके सहयोग

से यह करना चाहते है, हम यह काम किस तरह से आगे बढा रहे है इसकी जानकारी पुरी तरह से जितना संभव हो आपको बतलाते रहेंगे ।

(२) संघका बुनियादी आधार तथा संघरक्षितजी का उसमे स्थान :-

हम सभी इस विशिष्ट संघ के सदस्य इसलिए है क्योंकी हमारी दीक्षा एकही विरासत है। जो पीढी दर पीढी से आगे बढते आई है। त्रिरत्न के प्रति शरण गमन की संघरक्षितजी की जो सोच है वही हमारा मूल आधार है। यही सोच भंतेजीने उन्हे दि है,स्वयं जिन्हे भंतेजीने दीक्षीत किया है, उनमे से कुछ लोगोंने उसी सोच के साथ दिक्षाविधी को आगे बढाया है। इसी बात के महत्व को दर्शाने हेतु शिष्य(डिसाईपल) शब्द आया है, यद्यपी हम यह भी समझते है की कुछ लोगोंके लिए इस शब्द का ध्वनीत अर्थ कठीण है और हम इसपर जोर नही देना चाहते।

महाविद्यालय के जाहीर उपाध्याय, लोगोंको संघमे प्रवेश देकर स्वागत करते है और जब वे संघ छोड देते है उसे स्विकारने मे जिम्मेदार होते है। हम इस जिम्मेदारी को इसलिए निभाते है क्योंकी भंतेजीने उसे हमारे साथ बांटा है। यह निश्चित ही काफी विस्तृत स्वरुप की जिम्मेदारी माना जाता है, जिसे अन्य जेष्ठ संघ सदस्योंके साथ बाँटा जाता है, जिससे इस बात की तसल्ली की जाती है की संघ तथा आंदोलन जिस चैतन्य के साथ निर्माण हुआ है उसे उस तरह से कायम बनाए रखें ।
हम इस जिम्मेदारीयोंको बहुत ही गंभीरता से लेते है तथा उसे उसी आदर सम्मान के साथ आगे बनाए रखेंगे।

हम जानते है की कुछ संघ सदस्योंकी संघ के बारे मे अलग संकल्पना है और जैसा हम महाविद्यालय मे मानकर चलते है, उसे वे स्विकार नही कर सकते। हमे विश्वास है की वे श्रद्धावान तथा आदरपूर्वक धर्म आचरण करने वाले लोग है। तथापि, हम संघ सदस्य इसलिए है क्योंकी हम त्रिरत्न के प्रती हमारी शरण गमन की जो सोच है जो भंतेजी ने हमे सिखलाई है, उसे वैसा ही बांटते है और इसलिए हम वही सोच दीक्षा के तथा संघ के प्रती रखते है। जब हम इस बातसे बहुत जादा दुर हट जाते है तब हम हमारी एकत्रित इच्छाओंको गवां देते है (को इंसीडंस ऑफ विल्स) । जिससे संघ संभव होता है और ऐसा नही तो फिर हम स्वयं संघ सदस्य नही रह सकते।

हमे लगता है की संघ मे सामंजस्य की विस्तृत प्रक्रिया का यह महत्वपूर्ण हिस्सा है, की हम संघ मे आपस मे मिलकर, सुस्पष्टता से हमारे बीच जो भी कोई मतभेद हो उसे सुलझाने के लिए आपसी मित्रता और आदर के चैतन्य के साथ प्रयास करें।

(३) आचरण पद्धतियाँ तथा संस्थाएँ:-

हमे विश्वास है की हमारी आचरन पद्धतीयाँ और संघ के कार्य यह परिणामकारक साधन है जिससे की हम हमारी स्वआसक्ती को कम कर सकते है और उससे उपर उठ सकते है और त्रिरत्न के प्रति हमारे मन मे श्रद्धाभाव बढ सकता है, या हम यदी भंतेजी के ही भाषा का उपयोग करें तो हम परिणामकारक शरण गमन से अंतिम या सत्य शरण गमन की ओर , या उससे भी आगे बढ सकते है।

इस के साथ ही हमारी जो आचरण पद्धतियाँ है उसके उत्क्रांती और विकास का हम स्वागत ही करते है, जो भंतेजीके प्रस्तुतिकरण के दायरे मे है। इस दिशा मे एक महत्वपूर्ण विकास होते दिखाई दे रहा है वह है **सिख्खा प्रकल्प** जो की दो साल पहले आंतरराष्टीय कौंसील द्वारा शुरु किया गया था। जिसमे बहुत सारे संघ सदस्य शामिल होंगे, जो हमारी शिक्षांए एवं आचरण पध्दतीयोंका महत्वपूर्ण तरीकोंसे मूल्यमापन करेंगे। ताकी हम यह देख सके की किस तरह से कौन सी बातें हर स्तर पर अच्छा कार्य कर सकती है और ऐसी कौनसी बातें है जीसे अधिक परिणामकारक अभिव्यक्त या सुधार करने की जरुरत है। हम यह भी देखेंगे की जो सामाईक प्रक्रियाए(कॉमोनॅलिटी प्रोसेस), जिसे आंतरराष्टीय कौंसील ने मान्यता दी है उसीको आधार मानकर हमारी पद्धतीयोंका सुसंवादीत एवं संपूर्ण विकास होगा।

हमारी संस्थाओंको भी, जैसे जैसे संघ तथा आंदोलन आकार मे बढता जायेगा और भोगोलिक दृष्टी से विस्तारीत होता जाएगा वैसे उन्हे भी विकसीत होना पडेगा । जैसे अंतर्गत एवं बाह्य परिस्थितीयां बदलते जाएगी वैसे उन्हे बदलना होगा। इसलिए हम औरो के साथ मिलकर कार्य कर रहे है की जैसे हमारी रचनाओंका मूल्यांकन करें जो हमारी मूल्योंको भलीभाँती प्रस्थापित करे। हम किस प्रकारसे विस्तार पूर्वक सलाहमशवरा करते हुए परिणामकारक नेतृत्व का निर्माण करें। उर्ध्वगामी कल्याण मित्रता और व्यक्तियोंका मुक्त संघटन इन तत्वोंको इकट्ठा कैसे लाया जाए ।

संघ के भविष्य के जीवन के लिए हम सभी मिलकर कैसे जिम्मेदारी निभांए, इस तरह की कुछ अगूवाही कुछ समय पहले से ही चल रही है, उदा. के तौर पर महाविद्यालय ने बडी मात्रा मे आचार्यों की संख्या विस्तारीत की है, जो अब संघ के लगभग १० प्रतिशत है। और उनके साथ करीबीसे काम करके नए सदस्यों को प्रशिक्षीत तथा संघ मे लाए । अच्छे सलाह और सहकार्य के लिए आंतरराष्टीय कौंसीलने महाविद्यालय, संघ और आंदोलन के बीच मे सहज सवांद बना रहे इस कार्य की शुरुवात की है।

हमारे संघ तथा आंदोलन ने बहुत कुछ अच्छा किया है, कुछ लोगोंको उनका जीवन अर्थपूर्ण बनाने मे और मार्गपर सही विकास पाने मे सहायता की है, ऐसा होने के बावजुद भी स्पष्टरुपसे बहुत कुछ काम करना बाकी है, यदी हम सब ऐसी संस्कृती का निर्माण करे और रचनाएं निर्माण करें जो की महाविद्यालय, संघ तथा आंदोलन को सृजनात्मकता से और सुसंवादीतता से इकट्ठा लाकर आनेवाले ५० सालोंतक मदतगार साबीत हो। हम विस्तार से सलाह मशवरा करना चाहते है और हम आप सभी को इसमे

सहकार्य करने और सहभाग लेने के लिए आमंत्रित करते है ताकी हम इसे प्रत्यक्ष रुपमे साकार कर सके।

आपका धम्मबंधू
धम्मचारी सद्धालोक
अध्यक्ष, उपाध्याय महाविद्यालय

अगले कदम

महाविद्यालय के माध्यम से हम आनेवाले महिनों और सालोंमे जो कदम उठाने वाले है, उसका सारांश यहां दे रहे है, आशा है आप हमसे सहमत होंगे :-

- हम इस बात को बढावा देंगे और मदत करेंगे की हमारे अतित की वास्तविकताएं, जिसमे भंतेजी भी शामिल है, वह स्पष्ट हो। जो भी कुछ हुआ है उसे जाहीर तौर पर स्वीकार करें और उसका दस्तावेज बनाएं ।
- जो भी कोई पीडा इससे निर्माण हुई है, उसे धर्म तत्व के आधारपर सुलझाने मे प्रत्यक्षरुपसे प्रयास करेंगे, जहाँतक उचीत हो बाहरी अनुभवी लोगोंका मार्गदर्शन लेंगे।
- हम ऐसी कल्पनाओंको पहचानेंगे जो आंदोलन मे जाहीर की गई थी जो भी किसी प्रकारसे निरोपयोगी हो, उसे हम स्विकार नही करते।
- हम इसमे भी स्पष्टता लाएंगे की कौनसी कल्पनाएं और आचरण पद्धतीयां है जो कभी बूरी तरह से इस्तेमाल मे लाई गयी हो । ताकी उपयुक्त और अनिवार्य आचरण पद्धतीयाँ जैसे की एकेरी लिंग पर आधारीत गतीविधियां स्वस्थ रुपसे चले जो आज के काल मे सर्व सामान्य बात है।
- हम अपने संघ तथा आंदोलन मे भंतेजी की भूमिका को अनिवार्य मानते रहेंगे क्योंकी उन्होने त्रिरत्न के प्रती शरण गमन की समझदारी को हमारे साथ बांटा है, उसी के आधार पर हमारी दीक्षा और संघ निर्भर है और इसके साथ हम यह भी मानते है की उनकी कुछ कृतीयाँ हानिकारक साबीत हुई है।
- हम महाविद्यालय के माध्यम से जाहीर उपाध्याके रुप से हमारी अपनी जिम्मेदारी को निभाते रहेंगे उन तत्वोंके और आचरणोंके आधारपर जो भंतेजी ने हमे सिखलाई है। साथ ही साथ अन्य सभी संघ सदस्योंके साथ नजदीक से कार्य करते रहेंगे, विशेष तौरपर जिन्होने महत्वपूर्ण जिम्मेदारीयाँ उठाई है।
- हम इन बातोंको भी बरकरार रखना चाहेंगे जैसे की शिक्षांए और आचरण की पद्धतीयां जो हमे भंतेजी के विशेष प्रकारसे धम्म के प्रस्तुतीकरण से प्राप्त हुई है। साथ ही साथ हम सुचारु रुपसे

और सुव्यवस्थित रुपसे मूल्यांकन और विकास को भी बढावा देना चाहेंगे । जिससे की वह अधिकाधिक सभी ओर तथा सभी स्तर पर परिणामकारक बनें।

- हम अन्य लोगोंके साथ काम करना चाहेंगे की हमारी जो संस्थात्मक रचनाएं है, उनका मूल्यांकन करने के लिए ताकि उससे हमे एकता बनाए रखते हुए त्रिरत्न के प्रति शरण गमन अधिक से अधिक गहरा बनाने मे सहायता मिले। और कल्याणमित्रता के तत्व को एकरुप रखते हुए व्यक्तिगत जिम्मेदारीयोंको निभाते रहेंगे।
- जहाँ कही संभव हो हमारी अलग अलग दृष्टीकोन यदी संघ के स्वरुप को लेकर है, उनमे आचरण तथा शिक्षा के बारे मे हो या फिर उसमे भंतेजी का स्थान क्या है इसके बारे मे हो, ऐसे मुद्दोंको सुलझाने का प्रयास करेंगे। ताकी हम आनेवाले अगले ५० सालोंतक एकता के साथ आगे बढते रहेंगे और कभी भी नही थे उससे कई अधिक रुपसे धार्मिक दृष्टी से परिणामकारक बनते रहेंगे।